ॐ

~~~~~~~~~

विद्या भवन, बालिका विद्यापीठ, लखीसराय ।

कक्षा-नवम् विषय-हिन्दी

दिनांक-31/05/2020 क्षितिज-गद्य –खंड

शुभ प्रभात!

आप जिस ओर चलें, आपके आगे-आगे खुशियाँ ही खुशियाँ चले!

लाख प्रयत्न करें, उसके बावजूद भी जब हम सफल नहीं हो पाते हैं, तो हम दूसरों पर दोषारोपण करते हैं ईश्वर पर दोषारोपण करते हैं,अपने भाग्य को कोसते हैं लेकिन सकारात्मक सोच यही कहती है कि हम न तो दूसरे पर दोषारोपण करें, न ही ईश्वर पर दोषारोपण करें और न ही अपने भाग्य पर नकारात्मकता की चादर ओढ़ाएँ । बल्कि इतना अवश्य सोचना चाहिये, चलो जो
~~~~~~~~~

भी होगा अच्छा ही होगा! ईश्वर ने कुछ अच्छा ही सोचा होगा ।अभी तक स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। परिवर्तन यदि देखा जाए तो इतना अवश्य हुआ है, स्थिति भयावह दिन-ब-दिन होते जा रही है, प्रकृति में स्वच्छता चारों तरफ फैल गई है। वर्तमान परिस्थिति में हमारा नियंत्रण और धैर्य ही हमें काम देगा। इसलिए हमारा सुरक्षित रहना ,हमारा स्वस्थ रहना ही सबसे बेहतर होगा। ऐसी परिस्थिति में अपने आप को घर में सुरक्षित रखते हुए अपनी पढ़ाई को जारी रखें।

प्यारे बच्चों, कल की कक्षा को आज पुनः जोड़ते हुए कहानी कुछ इस प्रकार आगे बढ़ती है,

‘ल्हासा की ओर’

--राहुल सांस्कृत्यायन

दूसरे दिन हम घोड़ों पर सवार होकर ऊपर की ओर चले। डाँड़े से पहिले एक जगह चाय पी और दोपहर के वक्त डाँड़े के ऊपर जा पहुंचे। हम समुद्रतल से 17- 18 हजार फीट ऊंचे खड़े थे ।हमारी दक्खिन तरफ़ पूरब से

पश्चिम की ओर हिमालय के हज़ारों श्वेत शिखर चले गए थे। भीटे की ओर दीखने वाले पहाड़ बिल्कुल नंगे थे, न वहां बर्फ़ की सफेदी थी, न किसी तरह की हरियाली। उत्तर की तरफ़ बहुत कम बर्फ़ वाली चोटियाँ दिखाई पड़ती थीं । सर्वोच्च स्थान पर डाँड़े के देवता का स्थान था, जो पत्थरों के ढेर, जानवरों की सींगों और रंग-बिरंगे कपड़े की झंडियों से सजाया गया था। अब हमें बराबर उतराई पर चलना था ।चढ़ाई तो कुछ दूर थोड़ी मुश्किल थी, लेकिन उतराई बिल्कुल नहीं। शायद दो -एक और सवार साथी हमारे साथ चल रहे थे। मेरा घोड़ा कुछ धीमे चलने लगा। मैंने समझा कि चढ़ाई की थकावट के कारण ऐसा कर रहा है,और उसे मारना नहीं चाहता था ।धीरे-धीरे वह बहुत पिछड़ गया और मैं दोन्क्विक्स्तो की तरह अपने घोड़े पर झूमता हुआ चला जा रहा था। जान नहीं पड़ता था कि घोड़ा आगे जा रहा है या पीछे। जब मैं जोरौ देने लगता, तो वह और सुस्त पड़ जाता। एक जगह दो रास्ते फूट पड़े थे, मैं बाएँ का रास्ता ले मील -डेड़ मील चला गया।

आगे एक घर में पूछने से पता लगा कि लङ्कोर का रास्ता दाहिने वाला था। फिर लौटकर उसी को पकड़ा।चार-पाँच बजे के करीब मैं गाँव से मील भर पर था, तो सुमति इंतज़ार करते हुए मिले। मंगोलों का मुँह ऐसे ही लाल होता है और अब तो वह पूरे गुस्से में थे। उन्होंने कहा –"मैंने दो टोकरी कंडे फूंक डाले, तीन- तीन बार चाय को गरम किया।" मैंने बहुत नरमी से जवाब दिया – "लेकिन मेरा कसूर नहीं है मित्र !देख नहीं रहे हो, कैसा घोड़ा मुझे मिला है !मैं तो रात तक पहुंचने की उम्मीद रखता था।" खैर, सुमति को जितनी जल्दी गुस्सा आता था, उतनी ही जल्दी वह ठंडा भी हो जाता था ।लङ्कोर में वह एक अच्छी जगह पर ठहरे थे। यहाँ भी उनके अच्छे यजमान थे ।पहिले चाय- सत्तू खाया गया, रात को गरमागरम थुक्पा मिला ।

शेष आगे की कक्षा में ।

शब्दार्थ-:

दोन्क्विववक्स्तो- स्पेनिश उपन्यासकार सार्वेंतेज (17 वीं शताब्दी) के उपन्यास 'डॉन क्विक्जोट' का नायक, जो घोड़े पर चलता था।

दोनों चिटें- ञेनम् गाँव के पास पुल से नदी पार करने के लिए जोङ्पोन् (मजिस्ट्रेट) के हाथ की लिखी लमयिक् (राहदारी) जो लेखक ने अपने मंगोल दोस्त के माध्यम से प्राप्त की।

कंडे-गाय-भैंस के गोबर से बना गोल आकृति के उपले,जो ईंधन के रूप में प्रयोग किया जाता है ।

थुक्पा- सत्तू या चावल के साथ मूली हड्डी और मांस के साथ पतली ले की तरह पकाया गया खाद्य पदार्थ

सुमति- लेखक को यात्रा के दौरान मिला मंगोल भिक्षु जिसका नाम लोग से था उसका अर्थ है सुमति प्रज्ञा असुविधा के लिए लेखक ने उसे सुमति नाम से पुकारा है

छात्र कार्य-:कहानी वाचन सस्वर एवं शुद्ध-शुद्ध करें।

शब्दार्थ याद करें ।

धन्यवाद

कुमारी पिंकी “कुसुम”